Bmaan

राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 155

सम्मोहन

नागराज

गराज की कई घातक शक्तियों में से एक है, उसकी सम्मोहन शक्ति! और यह शक्ति आमतौर पर
भी नागों में कम या ज्यादा मात्रा में पाई जाती है। सम्मोहन का अर्थ हमेशा जादू-टोने से जोड़ा जाता रहा है।
रन्तु सम्मोहन का असली संबंध तो इच्छाशक्ति से है। सम्मोहन करने वाले की इच्छाशक्ति दूसरे पर इस
रह से हावी हो जाती है कि वह वही करता है, और देखता है, जो सम्मोहक करना या दिखाना चाहता है। ...
म्मोहन का संबंध जादू-टोने से चाहे न हो, पर मानसिक शक्तियों से जरूर है। क्योंकि तीव्र सम्मोहन के
न्दर दुनिया और ब्रह्मांड को हिला सकने लायक मानसिक शक्ति होती है। और जो इस मानसिक शक्ति
का इस्तेमाल करने का तरीका खोज निकालते हैं, वे सारी दुनिया पर फैला सकते हैं ...
सम्मोहन
संजय गुप्ता की पेशकश
लेखक: जॉली सिन्हा, चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले, विनोद कुमार
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता
मुझे भगाने की कोशिश करना बेकार है नागराज! नाग तभी वापस जाएगा, जब उसका काम हो जाएगा। बेकार अपनी मौत को मत बुलाओ!
महा सम्मोहक करणवशी के रहते नागराज का कुछ नहीं बिगड़ेगा इच्छाधारी नाग!
इसकी मणि प्राप्त करने की कोशिश करो नागराज! इस मणि में इसकी जान भी बसती है, और तुम्हारी इच्छाशक्ति तक को वश में कर लेने वाली सम्मोहन शक्ति भी!

महानगर की आबादी एक करोड़ की है! और बाहर से यहां रोज काम करने आने वालों की संख्या लगभग चार लाख है-
इसीलिए किसी भी कलाकार के लिए अपनी कला का प्रदर्शन करने की इससे बेहतर जगह हो ही नहीं सकती-
ओ भारती! तुम जानती हो कि मुझे भीड़-भाड़ में रहना पसन्द नहीं है। और ऐसे गाने, डांस, जादू-तमाशे के प्रोग्रामों में मुझे ज़रा सी भी दिलचस्पी नहीं है! मैं... मैं बोर हो जाता हूं! ...
KAMLA AUDITORIUM
जादूगी शाम
करणवशी के साथ
तुम्हारी यही तो प्रॉब्लम है राज! सिर्फ समस्याएं... अपराध और आतंकवाद के अलावा तुम और कुछ करते ही नहीं! और इन्सान की जिन्दगी के और भी पहलू होते हैं! और उन पहलुओं में सबसे जरूरी पहलू है मनोरंजन! एक बार शो देखो तो सही! फिर तुमको पता चलेगा कि तुम क्या मिस कर रहे थे!...
...शायद इससे तुम जिन्दगी को दूसरे नजरिए से देखने लगो नागराज! और मुझे भी!
ऐसे जादू के शोज तो बहुत ज्यादा बोरिंग होते हैं! जादू के नाम पर हाथ की सफाई दिखाते हैं। जबकि मैं तो ऐसे-ऐसे जादू देख चुका हूं, जिनको देखकर इन सभी दर्शकों की या शायद इस जादूगर की धड़कन रुक जाए!
ये जादूगर वैसा नहीं है ना... ओ राज! हालांकि इसका नाम पहली बार सिर्फ दो महीने पहले सुना गया था। लेकिन लोगों का कहना है कि करणवशी जादूगर सचमुच जादू दिखाता है! हाथ की सफाई नहीं! इसका शो देखने वाले इसकी ऐसी तारीफें करते हैं, जैसे इसके गुलाम हों!
ऐसा है तो देख लेते हैं! पर वादा करो, मेरे एक बार कहते ही यहां से चल दोगी!
क्योंकि राज सिर्फ तभी तक बैठा रह सकता है, जब तक नागराज का कहीं से बुलावा नहीं आ जाता!
प्रॉमिस! अब टेंशन छोड़ो और शो का मजा लो!

सभी दम साधे करणवशी के स्टेज पर प्रकट होने का इन्तजार कर रहे थे-
लेकिन करणवशी के बजाय, स्टेज पर कुछ और आकर गिरा-
मेरी कला के प्रशंसको! मेरे फन के गुलामों! यानी मेरे दर्शकों...
...दुनिया जानती है, और कहती है कि गुजरा हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता! इंसान बड़ी उम्र से छोटी उम्र में वापस नहीं जा सकता! मरकर वापस नहीं आ सकता!
यानी कंकाल से जिन्दा इंसान नहीं बन सकता! पर आप देख रहे हैं। और मैं कह रहा हूं, वक्त को वापस पलटाया जा सकता है!
कंकाल से जिन्दा इंसान बन सकता है! लेकिन तभी जब उस कंकाल को बनाने वाला हो जादूगरों का शहंशाह... करणवशी!

देखा तुमने नागराज! क्या ग्रैंड एपियरेंस था करणवशी का! पर ये ट्रिक उसने की कैसे होगी? वह तो टूटे कंकाल से जिन्दा इन्सान में बदल गया!
कैसी ट्रिक भारती? वह तो चुपचाप आकर खड़ा हो गया! कुछ धांसू से डायलाग जरूर मारे! पर उसमें तो कुछ भी ग्रैंड नहीं था!
क्या बात कर रहे हो राज? पहले कंकाल के टुकड़े गिरे, फिर कंकाल जुड़ा, फिर कंकाल पर नसें, मांस और खाल चढ़े, और फिर जीता-जागता करणवशी बन गया!
तुम सो गए थे क्या? खैर, अब देखो, करणवशी आगे क्या करता है! पर एक बात तो माननी पड़ेगी! करणवशी सचमुच का जादू जानता है!
भारती क्या कह रही है? मैं तो लगातार शो देख रहा हूं! मुझे कुछ क्यों नहीं दिखा?
मेरे शो की शुरुआत को पसन्द करने के लिए धन्यवाद! पर मौत और मौत से वापस जिन्दगी की तरफ आने के बीच में मैंने कुछ देखा! मुझे तो वह देखने के लिए मरना पड़ा! पर आप लोग उसे मरे बिना ही देख सकते हैं!
और वह नजारा है, नर्क का नजारा!

Amaan

अगले ही पल हर दर्शक की आंखें फैल गईं! पहले आश्चर्य से! और फिर भय से–
क्योंकि न जाने कैसे पूरा ऑडिटोरियम, नर्क का रूप धारण करता जा रहा था
य... यह हम कहां आ गए हैं?
ये तो सचमुच नर्क लग रहा है!
पर... मैं तो स्वर्ग-नरक मानता ही नहीं हूं!
हा हा हा! यहां पर तुम्हारे पापों का हिसाब होगा, मानवों! हर पाप के लिए एक अलग सजा! सदियों तक तड़पोगे तुम लोग!
ये तो यमदूत लग रहे हैं! क्या हम मर गए हैं?
पापों का हिसाब मरने के बाद ही होता है!
मैं तो जला! जला!
चोट तो सचमुच में लग रही है! यह जादू नहीं हो सकता!
बचाओ! बचाओ, करणवशी! ये तुम हमको कहां ले आए हो?
भारती पर भी बुरी गुजर रही थी–
बचाओ! मुझे इस यमदूत से बचाओ नागराज! यह मुझे आग में जलाने जा रहा है! पर... पर तुम तो खुद यमदूत के शिकंजे में हो! तुम मुझे कैसे बचाओगे?
यह सच नहीं हो सकता! मैं जरूर कोई सपना देख रही हूं!
नागराज! वह कौन है? तुमको अगर कोई बचा सकता है तो सिर्फ मैं!
महान जादूगर करणवशी!

नागराज!
मुझे बचाओ! मैं जल रही हूं!
भारती!
क्या हुआ भारती! तुम चिल्ला क्यों रही हो?
भारती के कानों तक मेरी आवाज नहीं पहुंच रही है! साथ ही साथ ऑडिटोरियम में बैठे लगभग सारे दर्शक कुछ न कुछ चिल्ला रहे हैं! बात कुछ और ही है! मुझे पता लगाना ही होगा कि भारती के साथ-साथ ये सब भी ऐसा क्या देख रहे हैं, जो इनके होश फाख्ता किए हुए हैं! पर यह कैसे पता चलेगा कि भारती क्या देख रही है?
मुझे भारती के मस्तिष्क में घुसने का प्रयत्न करना होगा!
सर्पों से तो मेरा मानसिक संपर्क हमेशा ही बना रहता है! मैं सूक्ष्म रूप में अपने विशेष नाग सर्पिष्क को भारती के शरीर में प्रवेश कराता हूं! यह भारती के रक्त के साथ बहकर इसके मस्तिष्क तक पहुंचेगा, और फिर मेरे पास उस घटनाक्रम के मानसिक संकेतों को प्रेषित करेगा जो इस वक्त भारती के दिमाग में चल रहा है! ...
...और सर्पिष्क चूंकि मेरे शरीर में पैदा हुआ सर्प न होकर नागद्वीप का सर्प है, इसी कारण यह बगैर मेरे विष के भी जीवित रह सकता है!

Amaan

भारती की रक्त धमनियों से होता हुआ सर्पिष्क भारती के मस्तिष्क की भूल-भुलैया में जा पहुंचा-
और 'विद्युत स्फुलिंगो' के रूप में भारती के दिमाग में बह रही विचार तरंगों का संपर्क नागराज के मस्तिष्क में जोड़ने लगा-
भारती के दिमाग में उभर रहे दृश्य नागराज के दिमाग में भी उभरने लगे-
और नागराज चौंक उठा-
ओह! करणवशी जादू दिखाने के लिए सम्मोहन का प्रयोग कर रहा है। और सम्मोहन के जरिए वह इन दर्शकों को भयभीत करने वाले दृश्य दिखा रहा है!
इसीलिए मुझे न तो करणवशी का 'डेड एपियरेंस' दिखाई पड़ा, और न ही नर्क के ये दृश्य! क्योंकि मुझको सम्मोहित कर पाने की क्षमता करणवशी के पास नहीं है! पर करणवशी दर्शकों को खुश करने के बजाय भयभीत क्यों कर रहा है?
★स्फुलिंग यानी चिंगारियां (SPARK)
खैर! अभी यह सोचने का वक्त नहीं है! किसी कमजोर दिल वाले की हृदय गति भी रुक सकती है! मुझे इसके सम्मोहन को काटना होगा! और वह भी चुपचाप! वरना करणवशी को राज की सम्मोहन शक्ति देखकर शक हो सकता! और उससे मेरा भेद खुल सकता है। एक दूसरा रास्ता है!
अभी करणवशी का मस्तिष्क सम्मोहन तरंगों के जरिए भारती के मस्तिष्क से जुड़ा हुआ है! और भारती का मुझसे! यानी मैं भारती के दिमाग के जरिए करणवशी के दिमाग तक पहुंच सकता हूं!

अगले ही पल नागराज की आंखों से सम्मोहन तरंगें निकल कर भारती की आंखों से टकराईं–
नागराज की सम्मोहन तरंगों के करणवशी के मस्तिष्क में घुसते ही करणवशी के मस्तिष्क को एक जोरदार झटका लगा–
साथ ही साथ-वह सम्मोहन-जाल भी छिन्न-भिन्न हो गया, जो दर्शकों को भयावह दृश्य दिखा रहा था–
ओह! हम तो वापस ऑडिटोरियम में आ गए!
बच गए!
और फिर वे तरंगें करणवशी की उन सम्मोहन तरंगों को नष्ट करती आगे बढ़ने लगीं जिनका संपर्क भारती से था–
और करणवशी के मस्तिष्क का वह भाग कुछ पलों के लिए सुन्न हो गया, जो सम्मोहन पैदा कर रहा था–
जान बची तो लाखों पाए!
अब भागो यहां से!
य... यह क्या? मेरा जादू टूट गया! किसी ने मुझ पर 'विपरीत सम्मोहन तरंगों' से वार किया है! पर किसने? इतना शक्तिशाली सम्मोहन इन दर्शकों में से किसके पास है! किसके पास?
ठहरो! रुक जाओ! भागो मत! अभी तो बहुत सारा जादू बचा है!
मेरे ख्याल से मेरी जिन्दगी भी अभी थोड़ी सी बची है! अगर यहां पर रुका तो वह शायद नहीं बचेगी!
अजी चलो! इसके मुंह क्यों लग रहे हो? हमको जीते जी यमदूतों से पिटवा दिया!
मैं... मैं नर्क में कैसे चली गई थी राज? और फिर वापस कैसे आ गई?
बताऊंगा भारती! फिलहाल तो इस भीड़ के साथ-साथ तुम भी यहां से बाहर निकलकर घर चली जाओ! मैं किसी को समझकर अभी आता हूं!

Amaan

करणवशी क्रोध से उबल रहा था-
किसी ने मेरे काम में व्यवधान पहुंचाया है! और उसके पास तीव्र सम्मोहन शक्ति है! मुझे उसको ढूंढना ही होगा! एक तो दंड देने के लिए और दूसरे उसकी सम्मोहन शक्ति को अपने काम में लाने के लिए! वह इसी भीड़ में कहीं है। मुझे इस भीड़ को यहीं पर रोक कर उसे ढूंढना होगा!
इस भागती भीड़ को सम्मोहित करना जरा मुश्किल काम है! लेकिन यहां पर और भी जीवित वस्तुएं मौजूद हैं! और हर जीवित वस्तु के अंदर दिमाग या दिमाग जैसा कोई और 'संचालन केंद्र' तो होता ही है, जिसे सम्मोहित किया जा सकता है!
जीवित वस्तुएं जैसे वायरस, बैक्टीरिया और अन्य अति सूक्ष्म जीव!
करणवशी की आंखों से निकलकर सम्मोहन तरंगें हवा में तैरने लगीं-
और हवा में मौजूद करोड़ों सूक्ष्म प्राणी एक-दूसरे से जुड़कर एक भयानक रूप धारण करने लगे-
EXIT
बाहर जाने के रास्ते पर ये... यह क्या चीज आ गई है? ये तो जैसे हवा में प्रकट हो रही है!
यह करणवशी का जादू है! रुको मत! भागते रहो! यह भी कोई असली चीज नहीं, बल्कि यमदूत जैसी काल्पनिक चीज है!
लेकिन आगे बढ़ते ही सबको पता चल गया कि वह वस्तु काल्पनिक नहीं थी-
हा हा हा! अब कहां भागोगे? भागो, भागो! कोशिश करो!
तब तक ऐसे और चार पांच प्राणी बना डालता हूं!
बाहर जाने का हर रास्ता रोकने के लिएsss
कड़

करणवशी पर हमला करने की जुर्रत किसने की ? किसकी हिम्मत हुई उसका 'सम्मोहन ध्यान' भंग करने की ?
मेरी!
नागराज की!
ओह! नाम तो कुछ सुना-सुना सा लग रहा है! कहां सुना है ? खैर, याद आ ही जाएगा! पर तूने मुझ पर हमला क्यों किया ?
उसके लिए मुझे खेद है! दरअसल तुमको रोकने का और कोई फटाफट तरीका मुझे समझ में नहीं आया!
रोकेगा ? तू मुझे रोकेगा ? महान सम्मोहक करणवशी को ? पहले तू मेरे द्वारा बनाए गए प्राणी को रोकले!...
...और अगर जिन्दा बच सकता अपनी यह इच्छा भी पूरी कर लेना!

Amaan

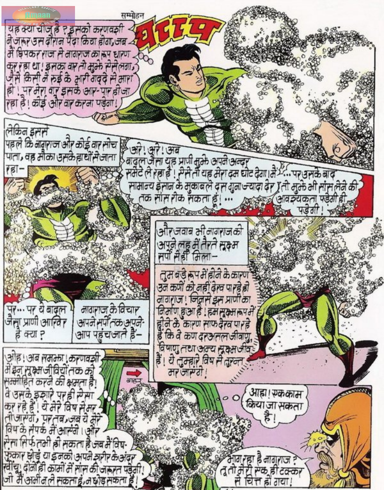

सम्मोहन
घटटप
यह क्या चीज है? इसको करणवशी ने जरूर उस दौरान पैदा किया होगा, जब मैं छिपकर राज से नागराज का रूप धारण कर रहा था! इसका वार तो मुझे ऐसे लगा, जैसे किसी ने रुई के भारी गद्दे से मारा हो! पर मेरा वार इसके आर-पार ही जा रहा है! कोई और वार करना पड़ेगा!
लेकिन इससे पहले कि नागराज और कोई वार सोच पाता, वह मौका उसके हाथों से जाता रहा—
अरे! अरे! अब बादल जैसा यह प्राणी मुझे अपने अन्दर समेटे ले रहा है! ऐसे तो यह मेरा दम घोट देगा। मैं सामान्य इंसान के मुकाबले दस गुना ज्यादा देर तक सांस रोक सकता हूं! ...
...पर उसके बाद तो मुझे भी सांस लेने की आवश्यकता पड़ेगी ही पड़ेगी!
और जवाब भी नागराज को अपने लहू में तैरते सूक्ष्म सर्पों से ही मिला—
पर... पर ये बादल जैसा प्राणी आखिर है क्या?
नागराज के विचार अपने सर्पों तक अपने-आप पहुंच जाते हैं—
तुम बड़े रूप में होने के कारण उन कणों को नहीं देख पा रहे हो नागराज! जिनसे इस प्राणी का निर्माण हुआ है! हम सूक्ष्म रूप में होने के कारण साफ देख पा रहे हैं कि वे कण दरअसल जीवाणु, विषाणु तथा अन्य सूक्ष्म जीव हैं! ये तुम्हारे विष से तुरन्त मर जाएंगे!
ओह! अब समझा! करणवशी में इन सूक्ष्म जीवियों तक को सम्मोहित करने की क्षमता है! वे उसके इशारे पर ही ऐसा कर रहे हैं! ये मेरे विष से मर तो जाएंगे, पर तब, जब ये मेरे विष के संपर्क में आएंगे। और ऐसा सिर्फ तभी हो सकता है जब मैं विष-फुंकार छोड़ूं या इनको अपने शरीर के अंदर खींचूं। दोनों ही कामों में सांस की जरूरत पड़ेगी! जो मैं अभी न ले सकता हूं, न छोड़ सकता हूं!
आहा! एक काम किया जा सकता है!
भाग रहा है नागराज? तू तो मेरी एक ही टक्कर से चित्त हो गया!

लेकिन नागराज न तो चित्त हुआ था, और न ही भाग रहा था! वह तो उस तरीके को आजमाने जा रहा था जो उसे सूक्ष्मजीवियों की कैद से आजाद करा सकता था-
ऑडीटोरियम जैसी किसी सार्वजनिक जगह पर आग बुझाने के साधनों को उपलब्ध रखना आवश्यक है! ऐसा साधन यहां पर भी है! मैंने अंदर जाते समय दीवार पर लगे कई 'अग्निशमन यंत्रों' को देखा था! पर फिलहाल तो मैं कुछ देख नहीं पा रहा हूं! मुझे अनुमान से ही उस दिशा में बढ़कर उस स्थान तक पहुंचना है, जहां पर ये यंत्र लगे हुए हैं!
नागराज को अपनी 'सर्प-इन्द्रिय' का इस्तेमाल करते हुए सही स्थान में पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगा-
ये रहे अग्निशमन यंत्र यानी फायर एक्सटिंग्विशर! इनके अंदर जो रसायन भरे हुए हैं, उनकी प्रतिक्रिया होती है। जब ये ठंडी से कार्बनडाय आक्साइड गैस की फोम पैदा होती है!
जो आग को बुझाने में सक्षम होने के साथ-साथ अत्यधिक ठंडी भी होती है। जब ये ठंडी फोम इस 'सूक्ष्मजीवी' बादल पर पड़ेगी तो ये सूक्ष्म जीवी अपने-आप नष्ट हो जाएंगे। क्योंकि कोई भी जीवाणु या विषाणु ज्यादा ठंड में जिन्दा नहीं रह सकता!
शून्य से कई डिग्री नीचे के तापमान ने कुछ ही पलों में उस सूक्ष्म जीवी कैद को छिन्न-भिन्न कर दिया-
और नागराज आजाद हो गया-
कर्णवशी को भी यह जानने में ज्यादा देर नहीं लगी कि उसका वार असफल हो गया है-
नागराज के चक्कर में मेरा ध्यान भटक गया, और कई दर्शकों को बाहर जाने का मौका मिल गया। अब इस भीड़ को रोके रखने का कोई मतलब नहीं है!
अब मुझे भी यहां से निकल जाना चाहिए!
आSSS ह!
य...ये सांप कहां से आ गए?
असली सांप!

मैं फिर वापस आ गया हूं करणवशी! और इस बार तुमको रोकने का सबसे अच्छा तरीका मुझे यही समझ में आया!
तू बच गया! और तेरे हाथ से सांप निकलते हैं! तू भी कोई जादूगर है क्या?
जादूगर नहीं! इच्छाधारी मानवनाग! जिसके शरीर में रहते हैं सांप! असंख्य सांप!
और मैं तुमसे लड़ना या टकराना नहीं सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि अन्य जादूगरों की तरह तुम अपने दर्शकों को खुश करने के बजाय डराने वाले खेल क्यों दिखा रहे थे?
और जब उन्होंने तुम्हारा शो बीच में ही छोड़कर जाना चाहा तो तुमने उनको एक भयानक जीव द्वारा रोकने की कोशिश क्यों की?
तू तो मेरा शो देख नहीं रहा था! मुझे अच्छी तरह से याद है कि मेरे दर्शकों में तू तो कहीं भी नहीं था! फिर तुझे क्या तकलीफ है? जादू दिखाना भी अपराध है क्या? मुझे खोल!
जादू दिखाना अपराध नहीं है! लेकिन लोगों को अकारण भयभीत करना अपराध की श्रेणी में आता है! अब बताओ, ऐसा क्यों किया तुमने?
मैं तुझे जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हूं नागराज!
वैसे बहुत हो गया यह खेल!
अब मैं तुझे दिखाता हूं कि करणवशी क्या चीज है!
अरे! त...तूने मेरी सम्मोहन किरणों को अपने सम्मोहन से नष्ट कर दिया! ऐसी ही सम्मोहन किरणों ने तो मेरे नर्क जाल को नष्ट किया था! कहीं तूने ही तो नहीं... नहीं यह काम दर्शकों में से ही किसी ने किया था! और मुझे याद है कि तू दर्शकों में नहीं था। खैर, तुझसे मुकाबला मजेदार होगा। और अब मेरा इन्तजार भी पूरा हो गया है। मेरी शक्तियां बढ़ने लगी हैं। अब देख अपनी जिन्दगी का आखिरी नजारा!
मेरी 'जड़ सम्मोहन किरणें' तेरे शरीर को हमेशा के लिए जड़ कर देंगी! सिर्फ मौत के बाद की अकड़न ही इस जड़ता को खत्म कर पाएगी!
इन्तजार पूरा हो गया? शक्तियां बढ़ रही हैं?
क्या अर्थ है करणवशी की इन बातों का!

शक्ति! इच्छाशक्ति! बहो मेरे शरीर में! शक्ति दो मुझे!...
...शक्ति!
धाड़
आऽऽऽह! इतना भयंकर वार!
खैर! कहीं से भी प्राप्त हो रही हो! यह बाद में सोचूंगा!
अभी तो इस पर जल्दी से जल्दी काबू पाना ज्यादा जरूरी लग रहा है!
इसकी शक्तियां बढ़ रही हैं! कहीं से इसको शक्ति प्राप्त हो रही है! पर कहां से?
फूऊऊऊ
आह! यह क्या छोड़ा है तूने मुझ पर? मेरा सर चकरा रहा है!...
इसे विषफुंकार कहते हैं करणवशी! मैं तेरे वार का जवाब उतने ही शक्तिशाली वार से दे सकता था...
...पर मैं खामख्वाह की हिंसा में यकीन नहीं करता!
अब मैं तेरी सम्मोहन शक्ति को ही अपनी सम्मोहन किरणों द्वारा खींच लूंगा!

आऽऽऽह!
तू तो सचमुच मेरी सम्मोहन शक्ति खींचे ले रहा है! तेरी सम्मोहन तरंगें बहुत शक्ति शाली हैं! तू मुझे शक्ति-हीन कर देगा! पर मैं ऐसा नहीं होने दूंगा!...
...नहीं होने दूंगा!
आऽऽऽह! अब...अब यह मुझ पर मानसिक शक्ति का वार कर रहा है! इसकी शक्तियां तो बढ़ती जा रही हैं! पहले इसने सर्प-बंधनों को तोड़ डाला! फिर मुझ पर अतिमानवीय शक्ति से भरा वार किया! और अब ये मानसिक वार! कहां से मिल रही हैं इसको ये शक्तियां?
अगर करणवशी नागराज की शक्तियों से अपरिचित था, तो नागराज को भी करणवशी की शक्तियों का आभास नहीं था-
मैं बेकार ही उस दूसरे शख्स को ढूंढ रहा था, जिसमें भीषण सम्मोहन शक्ति है। जब तू मेरे सामने है ही तो मुझे भला उसकी क्या जरूरत है! जैसे तू मेरी सम्मोहन शक्तियां सीख रहा था, वैसे ही मैं भी तेरी सम्मोहन शक्ति सीख सकता हूं!
और यह काम मैं तेरा सिर चकराना खत्म होने से पहले ही कर लूंगा, ताकि तू मेरा प्रतिरोध कर ही न पाए!
नागराज ने खुद ही करणवशी को यह आइडिया दिया था-

★इस बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें—इच्छाधारी

महानगर में फैले जासूस सर्पों तक नागराज का आदेश पहुंचने लगा-
र, असर जो भी हो! फिलहाल तो न वह असर रोकने की स्थिति में हूं, न ही करणवशी का पीछा करने स्थिति में! क्योंकि इसके मानसिक वारों कारण मेरा सिर अभी भी घूम रहा है! लेकिन णवशी बचकर जाएगा कहां? महानगर उसके आस-पास के इलाकों में फैले जासूस सर्प उसको ढूंढ ही निकालेंगे! अभी उनको करणवशी को ढूंढ निकालने का आदेश भेज देता हूं!
ब, इस वक्त मैं कुछ नहीं कर सकता! मुझे सूस सर्पों के संकेतों का इंतजार करते रहना गा! और समय का सदुपयोग मैं उन मासूमों बचाने के लिए कर सकता हूं, जो करणवशी मे ने के कारण भगदड़ में गिरकर या तो कुचले जा रहे हैं, या चोट खा रहे हैं!
ऑडिटोरियम के मुख्य द्वार और उसके आस-पास भारी जाम लग गया था! हर कोई दूसरे को पीछे हटाकर पहले बाहर निकलना चाहता था-
...और बालकनी में बैठे दर्शकों को नीचे उतरने का रास्ता शायद जाम मिला तो उनमें से कई दर्शक कूद-कूदकर ही अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहे हैं!
ओह! मैं तो छत के रास्ते आराम से बाहर आ गया, परन्तु अभी कई दर्शक अन्दर ही हैं!...
ENTRY
AUDITORIUM
ओह! वह बच्चा भीड़ के मारे नीचे कूद गया है। यह इतनी ऊंचाई से गिरकर मर सकता है! मुझे सबसे पहले इसे ही बचाना होगा!

नागराज के इस काम को ऑडीटोरियम से बाहर भागी सैकड़ों आंखों के साथ-साथ उन हजारों आंखों ने भी देखा, जो अब तक ऑडीटोरियम के बाहर जमा हो गई थीं-
से तो नागराज लग रहा है!
नागराज जैसा लग रहा है!
आंखें खराब हैं क्या तेरी? यह तुझे नागराज जैसा लग रहा है?
यह तो कोई राक्षस है। कोई शैतान! जिसने नागराज का सा रूप धारण किया हुआ है! और यह उस बच्चे को मारने जा रहा है!
हम अपनी जान बचाने के लिए तो भाग सकते हैं, पर किसी बच्चे की जान को खतरे में छोड़कर नहीं!
मारो इसे! मारो!
मैं पुलिस को फोन करता हूं!
तब तक मैं इसको रोकता हूं! मे
पास लाइसेंसी रिवॉल्व
है!

गया? ये मुझ पर हमला क्यों
र रहे हैं? और ये मुझे पहचान भी
हीं रहे हैं! चक्कर क्या है?
चक्कर कुछ भी हो! मुझे इनको रोकना होगा! क्योंकि इनके हमले से मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा! पर ये बच्चा घायल हो सकता है!
नागराज के हाथों से निकलकर सर्प-सेना भीड़ की तरफ उड़ चली-
मेरे सर्प भीड़ पर हमला तो नहीं करेंगे, लेकिन इनकी उपस्थिति ही भीड़ को तितर-बितर करने के लिए प्रर्याप्त रहेगी!
म...मुझे छोड़ दो नागराक्षस! म...मुझे मम्मी के पास जाना है!
बच्चा आजाद हो गया है! पर
अब ये नागराक्षस हम पर भयानक
कीड़े छोड़ रहा है! भागो!
भागना समस्या का हल नहीं है! एक बच्चा इसके हाथों से बच गया है तो यह दूसरे बच्चों पर हमला करेगा! इसको खत्म करना ही समस्या का अंत होगा! वर्ना यह हमारे बच्चों को मार डालेगा!
धांय धांय
बचेगा, तब कुछ कर पाएगा
? मैं अभी इसके सीने में सारी
की सारी गोलियां गाड़ देता हूं!
अब ये मुझ पर गोलियों से हमला कर रहे हैं। साथ ही साथ पथराव भी तेज हो गया है। यह भीड़ अनियंत्रित हो रही है!
इससे पहले कि ये सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाएं, मुझे इनको रोकना होगा! हल्की विष फुंकार यह काम कर सकती है! उससे ये लोग सिर्फ बेहोश हो जाएंगे, पर जान का खतरा नहीं होगा!

नागराज की विष-फुंकार ने सचमुच तहलका मचा दिया-
ओऽऽऽह! खों खों खों! य... यह तो नागराज की तरह ही विष फुंकार भी छोड़ रहा है!
इस पर गोलियों का भी असर नहीं हुआ! जैसे
राज पर नहीं होता है!
कहीं यह नागराज ही तो नहीं है! जिसको रूप बदलने के कारण हम पहचान नहीं पा रहे हैं!
हां! यह नागराज ही होगा! सुना है कि इसके अन्दर इच्छाधारी शक्ति है। उसी से यह
रूप बदलकर शैतान बन गया है!
नागराज शैतान बन गया है! हम पर भयानक जीव और विष फुंकार छोड़कर हमको मारने की कोशिश कर रहा है!
ऐसी बातें जब फैलनी शुरू होती हैं-
तो पूरे शहर में जंगल की आग की तरह फैलती है-
व्हॉट नॉनसेंस! क्या बकवास कर रहे हो राघव? नागराज मर जाएगा, पर शैतानों जैसे काम कभी नहीं करेगा!
वह ऐसे ही काम कर रहा है मैडम! यकीन न हो तो आप 'भारती न्यूज चैनेल' पर सजीव प्रसारण देख लीजिए! निशा वहां पर पहुंच-कर न्यूज कवर कर रही है!
क्या हुआ भारती? यह नागराज के शैतान बनने की क्या बात हो रही थी?
मैंने आपको
के शो के बारे में बताया
न दादाजी! यह भी
जरूर उसी का
सम्मोहन जाल

सम्मोहन कर दिया है
के वे नागराज को सामान्य रूप में देखने के
जाय एक शैतान के रूप में देख रहे हैं! और यह
त तो अभी साबित हुई जाती है! क्योंकि जहां
क मुझे पता है किसी टी० वी० कैमरे को
म्मोहित नहीं किया जा सकता है!
मुझे विश्वास है कि टी० वी० स्क्रीन पर नागराज अपने सामान्य रूप में ही नजर आएगा!
भारती ने टी०वी० पर 'भारती न्यूज चैनेल' को सेट किया, और उसकी आंखें आश्चर्य से फैलती चली गईं–
क्योंकि टी० वी० पर नागराज का जो रूप दिख रहा था–
वह उसका सामान्य रूप तो कतई नहीं था–
रुक जाओ, नागमानव, और अपने-आपको हमारे हवाले कर दो! वर्ना मेरी स्पेशल 'एंटीवेनम फोर्स' तुम्हारी जान लेने को मजबूर हो जाएगी!
नागमानव? क्या तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो ए. सी. पी. विष्णु? मैं नागराज हूं!

...तुम नागराज से एक राक्षस बन गए हो! तुम्हारे अंदर छिपा शैतान आज बाहर निकल आया है! वर्ना इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके न तुम ये भयंकर रूप धारण करते, और न ही भोले-भाले नागरिकों पर अपनी नागशक्तियों से हमला करते!
और अगर मेरी बातों को तुम झूठ साबित करना चाहते हो तो बदल लो अपना वह रूप, और कर दो अपने-आपको मेरे हवाले!
यकीन नहीं आता तो देखो अपना वह भयंकर चेहरा, जो शैतान के दिल को भी हिला दे!
संभल जाओ नागराज! मेरे वही पुराने दोस्त बन जाओ, जो अपराधियों को खुद-ब-खु... मेरे लॉकअप तक आने को मजबूर कर देता था!
विष्णु क्या बके जा रहा है? क्या हुआ है मेरे चेहरे को? कहीं यह करणवशी के अंतिम किरणवार का असर तो नहीं है!
शायद वह सम्मोह... किरण हो, जो इन लोगों को मेरा को... और रूप दिखा रही...
और अगर ऐसा है तो मुझे इस शीशे में अपना असली चेहरा ही दिखेगा! क्योंकि इस दुनिया का कोई भी सम्मोहन नागराज को सम्मोहित नहीं कर...अरे!
य... यह क्या? मुझे अपने चेहरे के स्थान पर किसी भयंकर सांप का चेहरा दिख रहा है। यह कैसे हो सकता है? यानी यह सम्मोहन नहीं है!
करणवशी की धमकी खोखली नहीं थी! वह सचमुच ऐसा इंतजाम करके गया है कि मेरी सुरक्षा में रहने वाले ही मेरी जान लें! पर मैं इस षडयंत्र को सफल होने नहीं दे सकता!
मैं अपने आपको पुलिस के हवाले नहीं कर सकता। मु... करणवशी को ढूंढना होगा! और उससे इस जादू की का... लेकर अपने सामान्य रू... में आना होगा!
वर्ना महानगर की जनता मेरी ही जान ले लेगी!
और करणवशी को रोकने वाला कोई नहीं रहेगा! न जाने क्या करना चाहता है व...

Amaan

सर! नागराज भागने की कोशिश कर रहा है!
अगर यह अपराधी नहीं होता तो भागने की कोशिश कभी न करता। पहले चरण का हमला करो!
अगले ही पल एक रॉकेट नागराज की तरफ लपक पड़ा-
ओह! ये मुझ पर रॉकेट से हमला कर रहे हैं!
वैसे तो ये मुझे लगेगा नहीं। पर ये रॉकेट अगर मुझे लग भी जाए तो कोई खास असर नहीं होगा!
लेकिन वह रॉकेट नागराज को सीधे लगाने के लिए दागा भी नहीं गया था-
कड़ाम्म
क्योंकि नागराज से थोड़े ही फासले पर वह रॉकेट फट गया-
और उसमें से कई तेज धारदार हथियार निकल कर हवा में चारों तरफ लपके-
आऽऽह! इस रॉकेट में विस्फोटक नहीं, धारदार हथियार भरे हैं। जो मुझे नुकसान पहुंचा सकते हैं! यानी इस एंटीवेनम स्क्वायड को मेरी शक्तियों को ध्यान में रखकर बनाया गया है!
इन्होंने मॉस्क भी इसीलिए लगा रखे हैं कि मेरी विष फुंकार इन पर असर न करे! लेकिन मेरे पास और भी शक्तियां हैं। देखना है कि ये उनका मुकाबला कैसे करते हैं!
जैसे नागरस्सी!

नागरस्सी सिर्फ एक पल के लिए सिपाहियों को बांध सकी-
ओह! इनकी बुलेटप्रूफ जैकेटों में धातु के तार लगे हैं! और इनकी पोशाकों में शायद ऐसी बैटरियां भी लगी हैं, जो उन तारों में करंट दौड़ा सकें! मेरी सर्प रस्सी जरूर इसी करंट के कारण टूटती जा रही है!
लगता है नागराज मुकाबला करने पर उतारू है। हमारा पहला वार विफल हो गया! लेकिन महानगर पर बार-बार हुए कई नागमानवों के हमलों के कारण हमने उनसे निपटने की जो तैयारी करी थी वह आज नागराज के खिलाफ काम आएगी। दूसरे चरण का वार करो!
एंटीवेनम ग्रेनेड का!
यस, सर!
आऽऽऽह! यह ग्रेनेड बनाने में जरूर पुलिस वालों ने डॉक्टर करुणाकरण की मदद ली होगी! ऐसी खतरनाक एंटीवेनम गैस सिर्फ वे ही बना सकते हैं!
यह 'एंटीवेनम' असरदार जरूर है विष्णु, पर इतना नहीं कि मुझे बेबस कर पाए!
मेरी फुंकार अभी इसका नाश कर देगी!

कब तक फुंकार छोड़ोगे नागराज ? हम ग्रेनेड छोड़ते रहेंगे, और तुम फुंकार छोड़कर अपना विष कम करते रहोगे! और थोड़ी ही देर में तुम इतने कमजोर हो जाओगे कि हम तुमको पिटारी में बन्द कर लें!
विष्णु ठीक कह रहा है! बचाव करके मैं सिर्फ अपना समय और शक्ति ही व्यर्थ करूंगा! मुझे खुद भी हमला करना होगा! लेकिन वह हमला ऐसा होना चाहिए जिससे इनको नुकसान न पहुंचे! और ऐसा तरीका सोचने के लिए मुझे वक्त चाहिए। क्योंकि मेरी कोई भी शक्ति इनको नुकसान पहुंचाएगी ही पहुंचाएगी!
हम इसके लिए भी तैयार हैं! इससे पहले कि ये पूरी तरह से अदृश्य हो जाए...
...ग्लू-शैल का इस्तेमाल करो! फायर!
फिलहाल इच्छाधारी कणों में बदलकर अदृश्य हो जाता हूं! ताकि मैं कोई तरीका आराम से सोच सकूं!
सर! नागराज अदृश्य हो रहा है!
गुड! नागराज इस वाटरप्रूफ सिंथेटिक गोंद को अपने आप कभी छुड़ा नहीं पाएगा! अब इस पर आराम से 'एंटी पॉयजन इंजेक्शनों' से वार करो! और जब ये बेसुध हो जाए, तब इसको अपने कब्जे में ले लो!
ओफ्! ये तो हर बार मुझसे एक कदम आगे निकल जा रहे हैं! ग्लू यानी गोंद से ढक जाने के बाद मैं अपने इच्छाधारी कणों को गैस की तरह हवा में बिखेर नहीं सकता! मुझे अपने असली रूप में आना ही पड़ेगा!
चप्प
माना कि ये गोंद वाटरप्रूफ है, विष्णु! पर इसको छुड़ाने के और भी तरीके हैं!
मैं अपनी कलाई पर से गोंद को हटाकर अपनी सर्प सेना के बाहर निकलने लायक जगह बना सकता हूं!

और फिर मेरी वह सर्प सेना सड़क को खोदकर पलभर में इतनी चौड़ी सुरंग बना देगी कि मैं उसमें समा सकूं!
और जब मैं इस सुरंग के दूसरे छोर से बाहर आऊंगा तो मिट्टी से रगड़ खा-खाकर ये गोंद भी मेरा पीछा छोड़ चुका होगा!
?
और तुम्हारे सिपाही भी!
तुम्हारे मॉस्क, बुलेटप्रूफ जैकेट, एंटीवेनम हथियार ये और सब कुछ तो शायद झेल जाते पर मेरा घूंसा नहीं झेल सकते!
मुझे पता था कि तुमको गिरफ्तार कर पाना मेरे सिपाहियों के लिए मुश्किल होगा नागराज! पर तुम अभी मुसीबत के मुंह से बाहर नहीं निकल पाए हो! नागराज! सुनो भीड़ का कोलाहल!
और ये तुमको खत्म करने के लिए इधर ही आ रहे हैं! पूरा शहर तुम्हारे खिलाफ हो गया है नागराज! जिन्दा रहने की एक ही सूरत है! अपने आपको पुलिस के हवाले कर दो!
वो रहा शैतान नागराज!
मामला हद से आगे बढ़ता जा रहा है!
और मेरे जासूस सर्प अभी तक

Amaan

मुझे करणवशी का पता जल्दी से जल्दी लगाना होगा! और इसके लिए अब मुझे अपने सर्पों के साथ-साथ भारती कम्युनिकेशंस की भी मदद लेनी होगी! जिसके रिपोर्टर महानगर के हर कोने में मौजूद हैं!
रुक जाओ नागराज! मेरे सिपाही बेहोश हो गए तो क्या, मैं तो अभी होश में हूं! मैं तुमको भागने नहीं दूंगा!
आऽऽऽह! यह जरूर 'स्टैटी पॉयजन' इंजेक्शन होगा!
सॉरी विष्णु! तुम पर वार करके मुझे कोई खुशी नहीं होगी! परन्तु मुझे रोककर तुम करणवशी की मदद कर रहे हो! और अपना नुकसान!
और मैं तुम्हारा नुकसान कभी नहीं होने दे सकता!
तड़ाक
न्यूज चैनेल पर लगातार नजर गड़ाए हुए भारती भी सोच में डूब गई-
क्या निशा का कहना सच है? नागराज क्या सचमुच नागराक्षस बन गया है? क्योंकि अगर यह सम्मोहन का असर होता तो टी.वी. कैमरा नागराज का असली रूप ही दिखाता! अब इस समस्या से मैं कैसे निपटूं? ओह! फोन! यह किसका फोन हो सकता है? नागराज का?
ट्रिन ट्रिन ट्रिन
जैसा कि आप देख रहे हैं, नागराज अपने पुराने दोस्तों तक पर वार करने में नहीं हिचक रहा है! क्या सचमुच नागराज राक्षस बन गया है?
दिस इज निशा फॉर भारती न्यूज चैनल!
पर ये फोन नागराज का नहीं था-
फोन करने वाले थे-
डॉक्टर करुणाकरण! हां मैं भारती! अच्छा! आपने भी वह सजीव प्रसारण देख लिया? आपकी क्या राय है?

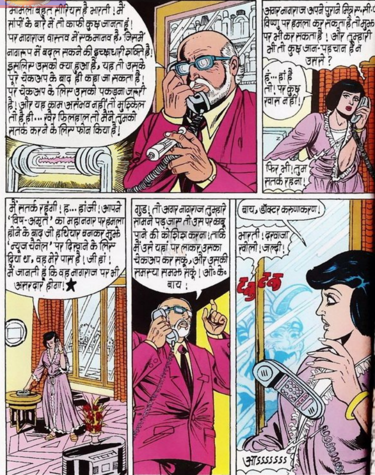
मामला बहुत सीरियस है भारती ! मैं सांपों के बारे में तो काफी कुछ जानता हूं ! पर नागराज वास्तव में एक मानव है, जिसमें नागरूप में बदल सकने की इच्छाधारी शक्ति है ! इसलिए उसको क्या हुआ है, यह तो उसके पूरे चेकअप के बाद ही कहा जा सकता है ! पर चेकअप के लिए उसको पकड़ना जरूरी है ! और यह काम असंभव नहीं तो मुश्किल तो है ही... खैर फिलहाल तो मैंने तुमको सतर्क करने के लिए फोन किया है !
अगर नागराज अपने पुराने मित्र एस.सी. विष्णु पर हमला कर सकता है तो मुझ पर भी कर सकता है ! और तुम्हारी भी तो कुछ जान-पहचान है न उससे ?
हं... हां है तो ! पर कुछ खास नहीं !
फिर भी ! तुम सतर्क रहना !
मैं सतर्क रहूंगी ! ह... हांजी ! आपने 'विष-अमृत' का महानगर पर हमला होने के बाद जो हथियार बनाकर मुझे 'न्यूज चैनेल' पर दिखाने के लिए दिया था, वह मेरे पास है ! जी हां ! मैं जानती हूं कि वह नागराज पर भी असरदार होगा ! ★
गुड ! तो अगर नागराज तुम्हारे सामने पड़ जाए तो उस पर काबू पाने की कोशिश करना ! ताकि मैं उसे यहां पर लाकर उसका चेकअप कर सकूं, और उसकी समस्या समझ सकूं ! ओ॰ के॰ बाय !
बाय, डॉक्टर करुणाकरण !
भारती ! दरवाजा खोलो ! जल्दी !
टक टक
आSSSSSSS

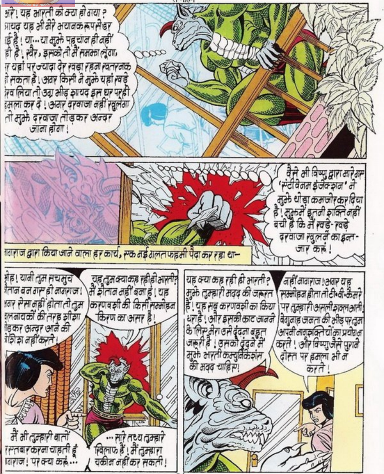
अरे! यह भारती को क्या हो गया? शायद यह भी मेरे भयानक रूप से डर गई है! या... या मुझे पहचान ही नहीं रही है! खैर, इसको तो मैं समझा लूंगा, पर यहां पर ज्यादा देर खड़ा रहना खतरनाक हो सकता है! अगर किसी ने मुझे यहां खड़े देख लिया तो उग्र भीड़ शायद इस घर पर ही हमला कर दे! अगर दरवाजा नहीं खुलेगा तो मुझे दरवाजा तोड़कर अन्दर जाना होगा!
वैसे भी विष्णु द्वारा मारे गए 'एंटीवेनम इंजेक्शन' ने मुझे थोड़ा कमजोर कर दिया है! मुझमें इतनी शक्ति नहीं बची है कि मैं खड़े-खड़े दरवाजा खुलने का इन्त-जार करूं!
नागराज द्वारा किया जाने वाला हर कार्य, एक नई गलतफहमी पैदा कर रहा था—
ओह! यानी तुम सचमुच शैतान बन गए हो नागराज! अगर ऐसा नहीं होता तो तुम खलनायकों की तरह शीशा तोड़कर अन्दर आने की कोशिश नहीं करते!
यह तुम क्या कह रही हो भारती? मैं शैतान नहीं बना हूं! यह करणवशी की किसी सम्मोहन किरण का असर है!
मैं भी तुम्हारी बातों पर एतबार करना चाहती हूं नागराज! पर क्या करूं...
...सारे तथ्य तुम्हारे खिलाफ हैं! मैं तुम्हारा यकीन नहीं कर सकती!
यह क्या कह रही हो भारती? मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है! यह सब करणवशी का किया धरा है! और इसकी काट जानने के लिए मेरा उसे ढूंढना बहुत जरूरी है! उसको ढूंढने में मुझे भारती कम्युनिकेशंस की मदद चाहिए!
नहीं नागराज! अगर यह सम्मोहन होता तो टी॰वी॰ कैमरे पर तुम्हारी असली शक्ल आती! बेगुनाह जनता की भीड़ पर तुम अपनी नागशक्तियों का प्रयोग न करते! और विष्णु जैसे पुराने दोस्त पर हमला भी न करते!

मेरी शक्ल कैसे बदल गई, यह मैं भी नहीं जानता भारती! ऑडिटोरियम के बाहर की भीड़ मुझे देखकर उग्र हो रही थी, और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचा रही थी! इसीलिए उनको तितर-बितर करने के लिए मुझे नागशक्तियों का प्रयोग करना पड़ा! और विष्णु मुझ पर 'एंटीविनम इंजेक्शन' का वार कर रहा था! पर मुझे करणवशी को खोजने जाना था! इसीलिए मैंने उस पर वार किया! पर वह वार घातक कतई नहीं था! ...
... करणवशी को खोजने में मेरी मदद करो भारती! ... आह! ...
... इस इंजेक्शन का 'एंटीवेनम' अभी भी मुझे कमजोर कर रहा है! मेरा यकीन करो भारती!
या तो तुम बीमार हो नागराज! या सचमुच तुम्हारे अन्दर का शैतान बाहर आ गया है! ... पता लगाने का एक ही तरीका है! तुमको काबू में करके तुम्हारा चेकअप करना! ... और यह 'एंटी पॉयजनगन' तुमको आराम से काबू में कर सकती है!
नहीं, भारती! ऐसी गलती मत करना! यह मुझे काफी नुकसान पहुंचा सकती है!

तुमको नुकसान नहीं पहुंचाएगी नागराज! बल्कि तुमको डॉक्टर करुणाकरण क्लिनिक में पहुंचाएगी! जहां पर डॉक्टर करुणाकरण तुमको ठीक करने का तरीका ढूंढेंगे!
भारती की ऊंगली ट्रिगर पर दब गई, और नागराज के लिए महाघातक विषनाशक की धार नागराज की तरफ लपक गई-
ओह! इधर-उधर हटने की जगह नहीं है! मुझे इच्छाधारी कणों में बदलना होगा! प... पर मैं अपने दिमाग को केन्द्रित ही नहीं कर पा रहा हूं!
म... मुझे इस धार से बचना ही होगा!
वर्ना पहले से ही 'एंटीवेनम' से कमजोर हुआ मेरा शरीर, इस विषनाशक की धार को झेल नहीं पाएगा!
लेकिन इससे पहले कि धार नागराज के शरीर को छू पाती-
एक अवरोध रास्ते में आ खड़ा हुआ-
ओह! दादाजी, यह आपने क्या किया? नागराज को आप देख नहीं पा रहे हैं! यह शैतान बन चुका है! आप सामने से हट जाइए! वर्ना अगर इसने अपने-आपको संभाल लिया, तो हमारे और आपके लिए भी कहर बन जाएगा!
भारती की जिन्दगी में पहली बार दादाजी का थप्पड़ पड़ा था-
होश में आओ भारती!
चट टक

यह मत भूलो कि नागराज कौन है, और तुम कौन हो! नागराज उस राजसी वंश की आखिरी निशानी है, जिसकी सुरक्षा की कुछ जिम्मेदारी वेदाचार्य और उसके वंश पर भी है! और मेरा वंश गद्दारों का नहीं; स्वामिभक्तों का है! जो अपने स्वामी पर खुद हथियार उठाने के बजाय, अपने आपको उस हथियार के सामने कर देते हैं, जो हमारे स्वामी पर उठता है!
नागराज पर हमला करने से पहले तुमको वेदाचार्य की लाश पर से गुजरना होगा! और ध्यान रखना, अपने स्वामी की रक्षा के लिए वेदाचार्य तुम्हारी लाश गिराने से भी नहीं हिचकेगा!
य... यह क्या कह रहे हैं, दादाजी, ऐसा तो मैं कभी सोच भी नहीं सक मैं तो नागराज की मदद ही कर रही हूं! बिना चेकअप के इसके रूप बदलने का पता नहीं चल सकता है! अगर आप इसका बदला रूप देख पाते तो...
मैं जो देख पा रहा हूं, वह तुम नहीं देख पा रही भारती!...
म... मैं ठीक फिर सबके साथ मुझको भी अपन रूप राक्षस जैसा दिख रहा है?
...मैं नागराज के रूप को अपनी मानस तरंगों के जरिए देख पा रहा हूं! और नागराज का रूप तो मुझे सामान्य ही दिख रहा है! यानी तुमको दृष्टि-भ्रम हो रहा है!
तुम्हारे शरीर के चारों तरफ मैं सम्मोहन किरणों का एक घेरा महसूस कर रहा हूं नागराज! ये सम्मोहन किरणें ही बाकी सबके साथ-साथ तुमको भी अपना रूप भयानक बनाकर दिखा रही हैं!
पर दादाजी, सम्मोहन इन्सानों या पशुओं की आंखों पर ही असर कर है! कैमरे की आंख प नहीं! फिर टी॰वी॰ प नागराज शैतान जै क्यों नजर आ रहा
हां, मुझे शीशे तक में अपना प्रतिबिम्ब शैतानी ही नजर आ रहा था!

यह घेरा अत्यंत तीव्र सम्मोहन किरणों का है! इसीलिए यह प्रतिबिम्ब को भी उसी रूप में दिखा रहा है! और रहा टी॰वी॰ कैमरे द्वारा भी यही भयानक रूप दिखाने का कारण, तो जहां तक मेरी जानकारी है, टी॰वी॰ कैमरा दृश्य और ध्वनि को चुंबकीय तरंगों में बदल कर उनको प्रेषित करता है! ये सम्मोहन किरणें अतितीव्र होने के कारण यह गुण रखती होंगी कि सम्मोहन ऊर्जा को भी चुंबकीय ऊर्जा में बदलकर, सम्मोहित दृश्य को ही प्रेषित कर दें!
ये सम्मोहन घेरा किसी और की नहीं बल्कि तुम्हारी ही सम्मोहन तरंगों द्वारा बना है नागराज! ये तुम्हारी ही सम्मोहन तरंगें हैं!
क्या? ओह, यानी करणवशी ने जो मेरी थोड़ी सी सम्मोहन शक्ति सोखी थी, उसने उसी का वार मेरे ऊपर कर दिया! पर इस असर को कैसे काटा जा सकता है दादाजी?
तुम्हारे सम्मोहन के बराबर का कोई अन्य सम्मोहन ही इस सम्मोहन घेरे को नष्ट कर सकता है नागराज!
ओह! इसके लिए तो मुझे महात्मा कालदूत की शरण में जाना होगा!
ओह, समझा! पर करणवशी के पास इतना अधिक तीव्र सम्मोहन आया कहां से?
मैं मानवता को बचाने के चक्कर में बहक गई थी दादा-जी! मुझे माफ कर दीजिए!
माफी मुझसे नहीं नागराज से मांगो भारती!
उसकी कोई जरूरत नहीं है भारती!
अगर स्वामी मानवता के विनाश पर उतारू हो जाएं तो उसके अनुचरों को भी ऐसे स्वामी की स्वामिभक्ति छोड़ने का पूरा अधिकार है। तुमने भ्रम के कारण जो कुछ भी समझा, उसके अनुसार एकदम ठीक काम किया। गुस्सा होना तो दूर मैं तुमसे बहुत खुश हूं। अब काम की बात सुनो! मुझे करण-वशी को खोजने के लिए तुम्हारे रिपोर्टरों की मदद की जरूरत है।...

Amaan

...क्योंकि मेरे जासूस सर्प अब तक करणवशी का पता नहीं लगा पाए... अरे! मुझे मेरे एक सर्प के मानसिक संकेत प्राप्त हो रहे हैं! ...
वाह! शायद उसने करणवशी का पता लगा लिया है!
इसका तो पता नहीं भारती, लेकिन ये संकेत किसी भयंकर खतरे के बारे में जरूर हैं!
और फिलहाल इस समय महानगर में एक ही भयंकर खतरा है! और वह है करणवशी!
मैं अभी तक 'स्टीविनम' इंजेक्शन के असर से पूरी तरह उबर नहीं पाया हूं! पर जाना तो पड़ेगा ही!
नागराज की हिम्मत तो तारीफ के काबिल जरूर थी-
पर उसका ख्याल इस बार गलत था-
खतरा करणवशी नहीं था-
माफ करना भाई पुलिस! अगर पता होता कि आप इस ऐतिहासिक खंडहर में तैनात हैं, तो पहले बाबू आपको डराकर भगाता और फिर खुदाई करता!
खैर! आपको तो सम्मोहन किरण की एक छोटी सी डोज से भी नींद आ जाएगी! आप पर मानसिक वार करके, आपका सिर तोड़ने में ऊर्जा खर्च नहीं करनी पड़ेगी!

Amaan

हमारी ऐतिहासिक धरोहरों पर पूरे देश की आंखें रहती हैं दुष्ट सर्प! ...
...सिर्फ एक सिपाही की नहीं!
हाईं! बैकग्राउंड से कौन बोला?
ओह! यहां तो बहुत पुलिस वाले तैनात हैं! और आश्चर्य की बात यह है कि ये अपनी ड्यूटी भी कर रहे हैं!
कुछ घूस-वूस ले लो भाई! फिल्मों में तो तुम लोग ऐसा ही करते हो sssss
हाय मर गया!
तड़ तड़ तड़ तड़तड़ तड़ तड़ तड़तड़
हम फिल्मी पुलिस वाले नहीं हैं सांप! हम उस कमांडो फोर्स के हैं, जिनकी आतंकवादी धमकियों के मद्देनजर इन ऐतिहासिक धरोहरों पर तैनात किया गया है!
मर गया! पर ये था कौन? हमको फिल्मी कह रहा था! पर खुद फिल्म के सेट से भागा हुआ लग रहा है!
इसका मेक-अप उतार कर देखते हैं! आओ!
इज्जत तो उतार दी नागू की, अब और क्या उतारोगे? कम से कम मरने से पहले एक घूंट जहर तो पिला दो!

य... यह तो जिन्दा है ! असंभव ! गोलियां तो इसके बदन के आर-पार हो गई थीं !
तभी तो मैं मरा नहीं ! अन्दर अटकी रहतीं तो शायद खांस-खांसकर मर जाता !
वैसे भी मैं इतना बिज़ी हूं कि मेरे पास मरने तक की फुर्सत नहीं है !
खैर ! मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है !...
...वर्ना दो-चार डॉयलाग और मारता ! फिलहाल तो यहां पर सिर्फ आप ही लोग हैं, मारने के लिए !
जल्दी मार खा लो, फिर मुझे खुदाई भी करनी है !
ताड़.
तड़ाक
दोनों पुलिसवालों के शरीर हवा में उड़ते हुए पथरीली दीवार की तरफ लपके–
पत्थरों से टकराकर सिपाहियों की कुछ हड्डियों का टूट जाना निश्चित था–
पर पथरीली दीवार और सिपाहियों के बीच में–
एक चट्टानी जिस्म आ गया–
नागराज के रहते न कोई मरेगा, और न ही कोई विनाश फैलाएगा !
अरे ! अरे ! अच्छी खासी थ्रिलर चलते-चलते यह हॉरर फिल्म कहां से शुरू हो गई ! मां ssssss बचाओ !
एक मिनट, जानी ! इसने अपने-आपको नागराज कहा ! नागराज के बारे में तो मैंने सुना है ! पर यह किसी ने नहीं बताया कि उसका मुंह घोड़े जैसा है !

मेरे मुंह को छोड़ो, और अपने चेहरे की चिन्ता करो! ... तुम तो मणिधारी और इच्छाधारी सांप हो! और जहां तक मैं जानता हूं, तुम लोग हर जीवित प्राणी से छिपकर रहते हो!... फिर तुम महानगर जैसी घनी मानव बस्ती में आकर विनाश क्यों फैला रहे हो?
माफ करना नागराज भाई! अभी मैं जल्दी में हूं! वैसे भी पता नहीं तुम मेरा यकीन करोगे या नहीं!
इसलिए नागू को अपना काम करने दो, और तुम अपना रास्ता देखो!
तुम्हारा यहां पर आना भी रहस्यपूर्ण है, और तुम्हारा ये ऐतिहासिक स्थल खोदना भी! तुम आखिर ढूंढ़ क्या रहे हो? जब तक मुझे अपने सवाल का जवाब नहीं मिलता...
... तब तक तुम पिटने के अलावा और कुछ नहीं करोगे!
तड़ाक
आआह! जोरदार वार है नागराज!
मैंने तुम्हारी शक्तियों के बारे में सुना है...
... पर तुम मेरी शक्तियों के बारे में नहीं जानते! सिर्फ इतना जान लो कि मणिधारी सर्प की शक्तियों के सामने तुम्हारी दुनिया की कोई भी शक्ति ठहर नहीं सकती!
धप्पप

तुम्हारा वार घातक तो जरूर है! पर तुमको यह जानकर काफी अफसोस होगा कि मुझ पर ऐसे वार असर नहीं करते!
ओऽऽऽ! बदन का छेद अपने आप भर गया! ऐसा तो मैंने एक विदेशी फिल्म में देखा था!
क्या नाम था उसका? क्या नाम था...
...टर्मिनेटर 2! यानी विनाशक! तू ठीक समझा नागू! कम से कम तेरे लिए तो मैं वही हूं!
ओऽऽऽ! फेमस विष फुंकार! मुझे तो सचमुच चक्कर आ गया! बड़ी तेज महक है इसकी तुम या तो कोलगेट टोटल से दिन में दस बार ब्रश किया करो नागराज, और या फिर रोज पचास पैकेट 'क्लोरेट' खाया करो! अगर मणि मेरी सुरक्षा न कर रही होती तो तुम्हारी सांस की बदबू तो मुझे मार ही डालती!
मैं यह बदबू और झेल नहीं सकता, इसीलिए तीव्र मानसिक वार करना ही पड़ेगा! ताकि न तो तू फिर कभी सांस ले पाए, और न ही ये घातक बदबू छोड़ पाए!
नागू की मणि से तीव्र मानसिक तरंगें निकलकर नागराज की गर्दन तोड़ने के लिए आगे लपकीं-
और नागू को चकित हो जाना पड़ा-
कमाल है! तू मेरी मणि का मानसिक वार झेल गया! और फिर भी तेरा सिर सही-सलामत है! पर... तेरा मुंह घोड़े से बदलकर इन्सानों जैसा क्यों हो रहा है?
मेरे सिर की रक्षा मेरी इच्छाधारी शक्ति करती है नागू! और मेरी शक्ल अरे, क्या कहा? मेरी शक्ल इन्सानों जैसी हो रही है! यानी... यानी...

...मणि की तीव्र मानसिक तरंगों के वार ने मेरे चेहरे के चारों तरफ बने, मेरे सम्मोहन घेरे को नष्ट कर दिया है! हो सकता है! यह संभव है! क्योंकि सम्मोहन तरंगें भी एक प्रकार की मानसिक तरंगें ही होती हैं। दादा वेदाचार्य की बात सत्य निकली!
अपने ही विचारों में डूबे नागराज की असावधानी ने—
नाबू को पलटकर वार करने का मौका दे दिया—
बहुत जान है रे तुममें नागराज! तुमसे लड़ने में बड़ा समय खर्च हो जाएगा रेऽऽऽऽ इसलिए फिलहाल तू मेरे छोटे गुंडों से लड़!...
...ताकि उतनी देर में मैं अपनी खुदाई का काम पूरा कर लूं!
गर्रर्रर्रर्र
सिर्रर्रर्र
ओह! इसकी मणि तो अद्भुत शक्तियों से भरी है! इसकी मणि की किरणों ने वायुमंडल में मौजूद धूल और गैस के कणों को जोड़-जोड़कर कई खतरनाक प्राणी पैदा कर दिए हैं!...
...और वे सब मुझ पर हमला कर रहे हैं!

Amaan

अगर ये मुझे काटने के बाद भी गले नहीं, तो इन पर विष फुंकार तो शर्तिया बेअसर साबित होगी!
क्योंकि ये जीवित प्राणी तो हैं नहीं!
अब देखना यह है कि इनकी आपस में टक्कर कितनी असरदार साबित होती है!
दोनों 'धूल प्राणियों' की आपस में हुई भीषण टक्कर ने पलभर में ही दोनों प्राणियों को धूल में बदल दिया-
लेकिन उनको वापस जुड़ने में भी उतना ही समय लगा-
आऽऽऽ ह!
सारी मेहनत बेकार गई! ये तो वापस जुड़ गए! और... और अब ये मेरा दम घोंटने का प्रयास कर रहे हैं!

Amaan

इस मुसीबत से तो मैं इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके बच जाऊंगा, पर इनसे लड़ने और बचने के चक्कर में मैं नागू को इस ऐतिहासिक स्थल को क्षति पहुंचाने से रोक नहीं पाऊंगा! जबकि फिलहाल नागू को रोकना ज्यादा जरूरी है!
नागराज की यह चिंता अगले ही पल दूर होती नजर आई-
अरे! यहां पर कौन आ गया मेरी मदद करने के लिए?
मैं आ गया हूं नागराज! दरअसल मैं इसी मणिधारी सर्प की तलाश में महानगर आया था, ताकि मैं इसकी जगह-जगह विनाश फैलाने की योजना को नाकाम कर सकूं! इसके पीछे मैं काफी दिनों से पड़ा हुआ था। और जो कुछ भी 'मैजिक शो' में हुआ, वह सिर्फ इसलिए ताकि मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करके यह देख सकूं कि वे इस मानसिक शक्तिधारी सर्प से निपटने योग्य हैं भी या नहीं!...
.. मैं उस सम्मोहन शक्तिवाले दर्शक को भी इसीलिए ढूंढना चाहता था, ताकि अपनी शक्तियों को इतना बढ़ा सकूं कि इस सर्प की पापी योजनाएं ध्वस्त कर सकूं!
पापी योजना तो तेरी है मानव!...
...पर बोलता रह झूठ! तू भी मानव है और नागराज भी! दोनों एक दूसरे के बात का यकीन तो करोगे ही! पर मैं अपना काम पूरा किए बगैर यहां से नहीं जाऊंगा!

इन दोनों की बातों से यह समझ में नहीं आ रहा है कि कौन सही है कौन गलत! पर फिलहाल, जब तक करणवशी और नागू आपस में उलझे हुए हैं, तब तक मुझे इन धूल प्राणियों से निपटने का रास्ता खोज लेना चाहिए!
पर रास्ता सोचूं तो तब, जब ये मुझसे जरा दूर हटें! ये तो दूर हटाते ही मुझसे ऐसे चिपक पड़ते हैं, जैसे ये लोहा हों और मैं चुम्बक!
और इनको खत्म करने का रास्ता हो भी क्या सकता है! ये तो मानसिक ऊर्जा द्वारा जुड़ी धूल से बने प्राणी हैं!... इन पर तो... आहा! मिल गया रास्ता!
मैं ही गलती कर रहा था! इनको खत्म करने का रास्ता इनको दूर भगाना नहीं, बल्कि इनको अपने शरीर से और कसकर लिपटने देना है! और एक बार ये सब मेरे शरीर से लिपट जाएं...
...तो मैं 'ध्यान-योग' से इनकी मानसिक ऊर्जा को अपने मस्तिष्क द्वारा सोख लूंगा!...
...और ये प्राणी धूल बन जाएंगे!... और मैं आजाद हो जाऊंगा!...
...अब देखता हूं कि करणवशी और नागू की 'रस्साकशी' में कौन जीत रहा है!

इस रस्साकशी में फिलहाल नागू का पलड़ा भारी था-
तूने मेरे सामने आकर बेवकूफी की है करणवशी! अब तू ही मुझे बताएगा कि कहां पर छिपा रखा है तूने उनको! बता!
कभी नहीं! वैसे भी तू मुझे ज्यादा देर तक बांध कर रख नहीं पाएगा! क्योंकि अब मेरे पास भी तेरी टक्कर की शक्तियां हैं!
उनके इस्तेमाल का मौका तुझे नहीं मिलेगा करणवशी! क्योंकि मैं तेरी इच्छाशक्ति को ही सोख लूंगा! जब तेरे अन्दर बचने की इच्छा ही नहीं रहेगी, तब तू वार क्या करेगा?
आऽऽऽह! सचमुच में ऐसा ही रहा है! मैं इस बंधन से निकलने के लिए कुछ नहीं कर पा रहा हूं! और यह बंधन मुझे जकड़ता जा रहा है! मेरी हड्डियां तोड़ रहा है!
... नागराज बच गया! तूने-तूने धूल प्राणियों को कैसे समाप्त किया?
ठीक वैसे ही जैसे अब मैं तुझे काबू में करूंगा! तेरी शक्तियां सोखकर!
पर यह स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रही-
सांप! मेरी मणि पर सांप लिपटकर इसकी किरणों को बाहर निकलने से रोक रहे हैं! यानी ...
मुझे इसकी 'मणिशक्ति' सोखने का प्रयास करना होगा! यही एकमात्र रास्ता है!

तू मेरी मणि पर सांप लपेटकर इसकी शक्ति को रोकना चाहता है, नागराज ! हा हा हा ! देख, तेरे सर्पों का मैं क्या हाल करता हूं ! मणि की उष्मा इनको पलभर में राख बनाकर हवा में उड़ा देगी !
और फिर मैं तुम दोनों की इच्छा शक्ति खींचकर, तुमको इस लायक ही नहीं छोड़ूंगा कि तुम लोग मुझसे लड़ सको !
आऽऽह ! इसकी किरण मेरे दिमाग पर एक मादक असर फैला रही है !
मेरी वार करने की इच्छा समाप्त हो रही है !
इसकी सर्प मणि छीनने का प्रयास करो नागराज ! वर्ना यह जल्दी ही हमारी सारी इच्छाशक्ति खींचकर हमको बिना इच्छाशक्तिवाला एक कायर बनाकर ही छोड़ेगा !
मैं क्या कर सकता हूं करणवशी ? यहां पर तो ऐसी छिपने की भी कोई जगह नजर नहीं आ रही, जहां पर इन मणि किरणों से बचा जा सके ! जो कुछ भी मैं कर सकता हूं, वह इन किरणों से बचने के बाद ही कर सकता हूं !
पर इन किरणों को अपने तक पहुंचने से रोकूं कैसे ? ओह ! सूखी पत्तियों का ढेर !
जिनको शायद यहां पर सफाई करने वाले इकट्ठा करके छोड़ गए हैं ! ये हमारी मदद कर सकता है !
नागराज के हाथ दो पत्थर उठाकर उनको आपस में तेजी से रगड़ने लगे –
ठक
ठक
और उनसे फूटी चिंगारियों ने –

सूखी पत्तियों के ढेर को सुलगाकर, नाग्रू तथा नागराज एवं करणवशी के बीच में धुएं की एक दीवार को खड़ा करना शुरू कर दिया-
तेरी मणि किरणें, और किसी भी दूसरी बाधा को भस्म कर सकती हैं नाग्रू...
... लेकिन ये दीवार तो पहले ही 'भस्म' की बनी हुई है! अब तेरी मणि किरणें हम तक नहीं पहुंच सकतीं! और इससे पहले कि तू मणि- किरणों का वार बदल पाए...
... मेरी अति तीव्र विष फुंकार तुझको बेहोशी की दुनिया में पहुंचा देगी!
आऽऽऽ ह!... मैं मणि की सुरक्षा में होने के बावजूद अपने- आपको बेहोश होने से रोक नहीं पा रहा हूं! हालांकि मैं ज्यादा देर तक बेहोश नहीं रहूंगा, पर उतनी देर तक भी मणि की सुरक्षा करना आवश्यक है! और इस हालत में मैं सिर्फ एक ही इन्सान पर भरोसा कर सकता हूं! तुम पर नागराज!
क्योंकि तुम इन्सान होने के साथ एक नाग भी हो! नाग्रू का विश्वास मत तोड़ना नागराज!

मेरे होश में आने तक इस मणि को अपनी जान से भी ज्यादा संभालकर रखना... वर्ना न जाने कितनी जानें इसकी बलि चढ़ जाएंगी!
ओह! नागू का रूप बदल रहा है! यानी इसने अपना यह भयंकर रूप मणि की शक्ति से बनाया था! शायद अपने किसी भी दुश्मन को डराने के लिए! पर 'जानों की बलि' से इसका क्या मतलब है?
शाबाश नागराज! तुमने महानगर को एक बहुत बड़े खतरे से बचा लिया है! अब लाओ, यह मणि मुझे दे दो! मैं इसको नष्ट करने का तरीका जानता हूं!
नहीं करणवशी!
अगर नागू इस मणि से महानगर को नष्ट करना चाहता तो बहुत पहले कर लेता! और इसे मेरे हाथों में तो कभी नहीं देता! क्योंकि इस वक्त मैं उसका प्रतिद्वन्द्वी था! बात कुछ और ही है! और वह बात नागू कुछ ही पलों बाद होश में आने पर बताएगा!
मेरा समय खराब मत करो नागराज!
मणि मुझे दे दे!
और अगर अपने-आप तू मणि नहीं देगा!...
...तो करणवशी उसे बलपूर्वक हासिल कर लेगा!
धड़ाक
आह!
अब मुझे समझ में आ गया है कि तू यहां पर नागू की मणि हासिल करने आया था!
मेरी मदद करने नहीं! पर इस वक्त मणि मेरे हाथ में है!...
...और यह मेरी मानसिक तरंगों की भी शक्तिशाली मानसिक वार में बदल सकती है!
अब मैं तुझे भागने नहीं दूंगा!
उम्मफ!

अब मैं यहां पर रुककर अपनी उस शक्ति को बर्बाद नहीं करूंगा, जो मैंने बड़ी मेहनत से इकट्ठी की है! मुझे अपनी योजना पर अमल शुरू करने के लिए थोड़ी सी और मानसिक शक्ति की जरूरत है, जो मुझे इस मणि से मिल जाती!
पर कोई बात नहीं, मैं उस शक्ति को एक दूसरी जगह से प्राप्त कर लूंगा! और उसके बाद तू देखेगा करणवशी की योजना! इस दुनिया के साथ-साथ मेरा गुलाम बनकर!
ओह! यह अपनी मानस तरंगों के सहारे उड़ सकता है! मैं इसका पीछा नहीं कर सकता। पर इतनी भीषण शक्तियां इसमें आईं कहां से?
ये तुम्हारे महानगर के निवासियों की वह सम्मिलित इच्छाशक्ति है नागराज, जिसे करणवशी धीरे-धीरे करके चूस रहा है!
अरे तुम होश में आ गए नागू! पर करणवशी महानगर की जनता की इच्छाशक्ति कैसे चूस सकता है?
ऐसी मणियों के सहारे! जिनको उसने मेरे परिवार के अन्य मणिधारी सर्पों से हासिल कर लिया है, और जो इस वक्त महानगर के पांच कोनों में धरती के नीचे दबी हुई हैं!
मैं उन मणियों को ढूंढने के लिए ही खुदाई कर रहा था! परन्तु यहां पर कोई मणि नहीं है! अब वे मणियां कहां दबी हैं, उनकी सही स्थिति को करणवशी के अलावा और कोई नहीं जानता!
मुझे पूरी बात शुरू से बताओ नागू! करणवशी कौन है, और उसका तुम मणिधारी नागों से सम्पर्क कैसे हुआ?

Amaan

मेरी ही गलती से नागराज! दरअसल मुझे फिल्में देखने का बहुत शौक है! और ये लत मुझे उन मिशनरियों से लगी, जो हमारे जंगल के आदिवासी कबीलों को छोटे प्रोजेक्टर पर फिल्में दिखाने जंगल में आया करते थे। धीरे-धीरे मैं अपने परिवार से छिपकर शहर जाने लगा! अपनी मणि की मदद से इन्सानी रूप धारण करके फिल्में देखने के लिए। छिपकर इसलिए क्योंकि हमारी जाति में किसी भी जीवित प्राणी से दूर रहने की सख्त हिदायत है!
शायद वहीं पर शहर में करणवशी की नजर मुझ पर पड़ी होगी! उसकी पारखी नजरों ने मुझे तुरन्त पहचान लिया! और मेरा पीछा करते-करते वह हमारे निवास स्थान तक आ गया। करणवशी को तंत्र-मंत्र की भी अच्छी जानकारी है। हमारे निवास स्थान के पास आकर उसने अपने-आपको स्वयं ही बुरी तरह से घायल कर लिया, और वहां पर गिर गया—
हमारे परिवार के दयालु सर्पों ने उसको देखा, और वैसा ही हुआ जैसा करणवशी ने सोचा था। वे उसको उठाकर घर ले आए, और मणि किरणों से उसकी चिकित्सा करने लगे! पर करणवशी बेहोश होने का नाटक किए रहा—
दरअसल वह अमावस्या की रात का इंतजार कर रहा था जिस समय सूर्य-चांद कुछ भी न होने के कारण हम मणिधारी सर्पों की शक्ति क्षीण होती है—
एक दिन बाद ही अमावस्या थी। और उसी रात करणवशी ने अपने घातक तंत्र-मंत्र चलाकर मेरे परिवार के पांच नागों को बेहोश कर दिया, और उनकी मणियां छीन लीं—
मैं सिर्फ अपनी लत के कारण बच गया, क्योंकि उस रात भी मैं फिल्म देखने शहर गया हुआ था—

लौटकर जब मुझे सारी बात का पता चला तो मैं तुरन्त करणवशी की तलाश में निकल पड़ा! क्योंकि मणियां न होने के कारण मेरा पूरा परिवार शक्तिहीन हो गया है, और वे सब कभी भी जंगली जानवरों का शिकार बन सकते हैं! हमारी मणियों में किसी की भी इच्छाशक्ति सोख सकने की अद्भुत क्षमता है, और करणवशी उसी के सहारे इतना शक्तिशाली बन गया है!
मामला खतरनाक है! अगर सिर्फ महानगर वासियों की थोड़ी सी इच्छाशक्ति उसे इतना शक्तिशाली बना सकती है, तो जब उसकी शक्ति और बढ़ेगी, तब वह क्या करेगा! क्या हो सकती है उसकी योजना?
यह तो पता नहीं नागराज! पर करणवशी को रोकने का एक ही तरीका है। पांचों मणियों को ढूंढकर उनको अपने कब्जे में ले लेना! पर मणियों की स्थिति का पता सिर्फ करणवशी ही जानता है!
करणवशी को अभी भी थोड़ी सी शक्ति की जरूरत है! और यह शक्ति उसे जल्दी चाहिए! वह धीरे-धीरे मिलने वाली इच्छाशक्ति का इन्तजार नहीं कर सकता! क्योंकि अब उसे तुमसे और मुझसे खतरा है!
यह शक्ति वह 'एक दूसरी' जगह से प्राप्त करने की बात कर रहा था! वह जगह कौन सी हो सकती है?
करणवशी किसी सम्मोहन धारी इन्सान का जिक्र कर रहा था! शायद वह उसी को ढूंढेगा। ताकि उसकी सम्मोहन शक्ति को छीनकर अपनी इस कमी को पूरा कर सके। पर वह इन्सान है कौन?
मैं उसे जानता हूं! आओ हम अपनी योजना बनाते हैं!

करणवशी को राज की तलाश थी–
जो लगभग एक घंटे के बाद भारती न्यूज चैनेल के लिए 'सजीव प्रसारण' कर रहा था–
यह है वह ऐतिहासिक स्थल जहां पर आज कुछ देर पहले एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा तोड़-फोड़ की गई!
LICE
पहरे पर तैनात कमांडो के अनुसार वह एक नागमानव था, जिसे नागराज ने रोकने की कोशिश की! परन्तु…
अरे! वही है! यह तो वही है! मैं तो शहर के हालात जानने के लिए समाचार देख रहा था! पर मुझे क्या पता था कि इसको मानस जाल द्वारा ढूंढने से पहले ही यह मेरी आंखों के सामने आ खड़ा होगा!
…अब देर करना उचित नहीं है! मंजिल मेरी आंखों के सामने है!
राज बेखबर था कि करण वशी की नजर उस पर पड़ चुकी है–
और जब हमारी न्यूज टीम यहां पर पहुंची तो यहां पर कोई भी नहीं था! नागराज भी अपने विचार देने के लिए उपलब्ध नहीं था। हम इस केस की आगे की जानकारी भारती न्यूज चैनेल पर देते रहेंगे!
जानकारी देने की आवश्यकता नहीं है…
…अब तुम्हारे दर्शकों को जो जानना है, वह वे खुद ही देख लेंगे!
करणवशी! तु…तुम यहां पर?
और तुम उड़ कैसे रहे हो?

अपनी जिन्दगी को इस व्यर्थ काम में क्यों खराब कर रहा है? तेरे पास तो वह अद्भुत शक्ति है, जो जिन्दगियों पर राज कर सकती है!
वह तो आप जैसे महान लोग ही करते हैं श्री करणवशी जी! पर जब आप सामने आ ही गए हैं तो एक इन्टरव्यू...
दूंगा! जरूर दूंगा! पर एकान्त में तुझे अपने साथ ले जाकर!
आऽऽह!
राज!
राज का बदन पलभर के लिए एक चमकदार रोशनी से घिर गया—
और किसी के कुछ समझ पाने से पहले ही बेसुध राज को करणवशी अपने साथ ले जा रहा था—
?
कैमरामैन ने तुरन्त खबर, ऑफिस में पहुंचा दी-
मैडम! गजब हो गया! करणवशी मिस्टर राज को उठा ले गया है! पुलिस की आंखों के सामने से! आप... आप तुरन्त कुछ कीजिए!
क्या खबर है भारती?
ओह! यह क्या हुआ? म... मैं कुछ करती हूं! ओ० के०!
राज को करणवशी उठा ले गया है!
गुड! वेरी गुड!

Amaan

करणवशी, 'राज' को महानगर के पास के एक एकांत स्थान तक ले आया था-
तू अपने-आप में एक रहस्य है मानव! तेरे अन्दर भीषण सम्मोहन शक्ति है, और तू उसका प्रयोग भी करता है। परन्तु फिर भी अपना जीवन एक मामूली सूत्रधार बनकर जीना चाहता है!...
...खैर मुझे क्या? मुझे तो तेरी वह सम्मोहन शक्ति सोखनी है, जो लाखों मानवों की सम्मिलित इच्छाशक्ति के बराबर है। उसको पाकर मेरी मानसिक ऊर्जा संपूर्ण हो जाएगी!
और फिर शुरू होगी, दुनिया को गुलाम बनाने की मेरी योजना!
करणवशी की मानस तरंगें राज की आंखों के रास्ते से उसकी सम्मोहन शक्ति को खींचने लगीं-
पर कुछ मिनटों तक यह सिलसिला चलने के बाद करणवशी चौंक उठा-
अरे! सम्मोहन शक्ति खत्म! इतनी ही शक्ति थी इसमें? यह कैसे हो सकता है! खैर, देखता हूं कि...
...अब जरा इधर भी देख लो करणवशी! तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है!
कौन? य... यहां पर कौन आ गया?
मैं नागराज! और ये रही तुम्हारी वे मणियां, जिनके बूते पर तुम न जाने कौन सी शैतानी योजना बुन रहे थे!
त... तूने ये मणियां कैसे ढूंढीं? कैसे पता लगा तुझे इनकी स्थिति का?
मैंने बताया! दरअसल हम वो नहीं हैंsss जो दिखते हैं। हम नाग हैं, नागू! और ये रूप हम अपनी मणि शक्ति द्वारा बनाए हुए थे! समझे जानी! नहीं समझे?
हैं?

नागू! हमको पता था कि तुम राज को ही ढूंढने जाओगे! अतिरिक्त सम्मोहन शक्ति पाने के लिए! अब ये मत पूछना कि यह हमको कैसे पता था!
बस! हम राज को टी॰वी॰ पर ले गए! और तुम उसे देखते ही वहां पर आ धमके! तुम नहीं आते तो हम कोई और रास्ता अपनाते! पर तुम आ गए। और 'राज' को अपने साथ ले आए!
अब जिस वक्त तुम राज यानी नागू का दिमाग टटोलकर सम्मोहन शक्ति खींच रहे थे, नागू तुम्हारे दिमाग को टटोलकर मणियों की स्थिति का पता लगा रहा था, और मुझे मानसिक संकेत प्रेषित करता जा रहा था!
और मैं मणियों को उन- उन स्थानों से खोदकर निकालता जा रहा था, जहां पर तुमने इनको दबाया हुआ था! अब तुम इन मणियों का इस्तेमाल किसी की भी इच्छाशक्ति खींचने के लिए नहीं कर सकते! तुम्हारा खेल खत्म हो गया है करणवशी!
मेरा खेल अब शुरू होगा नागराज! क्योंकि मुझे जरूरत भर शक्ति मिल गई है!
और उसमें से एक रोशनी का जाल निकलकर आकाश पर छाने लगा-
देख मेरा खेल! मेरी उस योजना की शुरुआत देख, जिसके लिए मैंने इतना सब किया!
करणवशी की आंखों में रोशनी का एक चमकता गोला फूटकर हवा में उछला-
देख नागराज! यह सम्मोहन जाल है, जो अब सारी दुनिया पर छाएगा! और जो असर नागमणियां महानगर वासियों पर कर रहीं थीं, वह असर यह सारी दुनिया के मानवों पर करेगा! सबकी इच्छा शक्ति खींचकर मेरे अन्दर स्थानांतरित कर देगा! और मुझे बना देगा इस दुनिया का शहंशाह!

देख ! अभी से मेरे शरीर में मानसिक ऊर्जा भरनी शुरू हो गई है ! भीषण ऊर्जा मिल रही है मेरे शरीर को !
इसके शरीर से निकलती मानसिक ऊर्जा की भीषण तरंगें मेरे दिमाग को ऐसे थपेड़े दे रही हैं, जैसे कोई नाव समुद्री तूफान के थपेड़े को झेलती है।... पर इसको रोकना ही होगा नागू! रोकना ही होगा!
अब हम इसकी शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकते, नागराज ! अब तो मणि की शक्ति भी इसके सामने कुछ नहीं है !
यह असंभव है नागराज ! इसके सम्मोहन जाल को कोई ऐसा ही विशाल विपरीत सम्मोहन जाल ही नष्ट कर सकता है। और ऐसा सम्मोहन जाल, जो पूरी दुनिया पर फैल सके, वह शायद ब्रह्मांड में किसी के पास नहीं है !

सम्मोहन जाल! हां एक रास्ता है नागू! हर नाग के अन्दर सम्मोहन होता है! यानी नागों का एक विशाल जाल, सम्मोहन जाल की तरह ही काम करेगा!
पर इतने लाखों-करोड़ों नाग आएंगे कहां से नागराज?
हालांकि इससे मैं एक बेजान लाश की तरह रह जाऊंगा! पर यह खतरा मुझे उठाना ही होगा!
मेरे शरीर से नागू! मेरे शरीर से!
नागराज ध्यान मुद्रा में बैठ गया! अब उसका लक्ष्य सिर्फ एक था-
अपने सांपों को शरीर से निकालकर पूरी पृथ्वी पर एक विपरीत सम्मोहन नाग जाल फैलाने के साथ-साथ अपने शरीर में सांपों को द्विगुणित भी करते रहना-
ताकि जाल की सततता टूटने न पाए-
परन्तु यह कठिन प्रक्रिया, नागराज के शरीर में से आवश्यक जीवन द्रव्यों को भी खत्म करती जा रही थी, जो नागराज को जीवित रखने के लिए आवश्यक थे-

सर्पजाल, उतनी ही तेजी से फैल रहा था, जितनी तेजी से करणवशी का सम्मोहन जाल अपना आकार बढ़ा रहा था-
य... यह क्या हो रहा है? इतने सारे सर्प कहां से आ रहे हैं? ये... ये मेरे सम्मोहन जाल की संधियों को तोड़ रहे हैं!
मेरा जाल नष्ट हो रहा है! सिमट रहा है। मेरी योजना खाक में मिल रही है!... नागराज! यह सर्पजाल तू बिछा रहा है!
तेरे सर्पजाल ने सिर्फ मेरे सम्मोहन जाल को ही नहीं, मेरी जिन्दगी के मकसद को भी नष्ट कर दिया है। और इसके लिए अब मैं तुझे नष्ट कर दूंगा!
नागराज की तरफ बढ़ते, करणवशी के उस घातक वार को-
नागू ने अपने शरीर पर झेल लिया-
आऽऽऽऽ बचो नागराज!
कैसे बचेगा नागराज? पहला वार तो तूने झेल लिया! पर अब उसे कौन बचाएगा?
सचमुच! मुझमें तो अब हिलने की भी शक्ति नहीं है! करणवशी जैसे शक्तिशाली का मुकाबला अब भला मैं कैसे करूंगा। नहीं! मुझे हार नहीं माननी है! नहीं माननी है!

केंचुए की तरह रेंगता नागराज का शरीर इधर-उधर रेंगने लगा-
हा हा हा ! अब तो मुझे इस खेल में मजा आ रहा है ! ... तू कीड़ों की तरह रेंग-रेंगकर मरने से बचना चाहता है। पर तेरी चाल तो घोंघे से भी सुस्त है ।... करणवशी के वार से चीता नहीं बच सकता तो घोंघा क्या बचेगा !
मैं बच नहीं रहा हूं, करणवशी ! मैं तेरी मौत का सामान इकट्ठा कर रहा हूं !
यहां पर कंकड़-पत्थरों के अलावा और है क्या ? क्या तू मुझे पत्थर मार-मारकर मारेगा ? हा हा हा !
पत्थर ही समझो ! कुछ नादान पत्थर और रत्नों में फर्क नहीं समझते हैं ! ...
... मैं उन सर्प मणियों को इकट्ठा कर रहा था, जिनको मैं यहां पर लेकर आया था !
और मेरे अन्दर अभी भी इतनी मानसिक ऊर्जा मौजूद है...
... कि जब वे इन पांच मणियों से होकर गुजरेगी, तो इतनी शक्तिशाली हो जाएगी कि तुझे धूल चटा सके !

Amaan

रही सही कसर मैं पूरी कर देता हूं, नागराज! और इससे पहले कि ये संभल पाए, मैं अपनी मणि की मदद से इसकी शक्ति भी खींच लेता हूं! कम से कम वह सम्मोहन शक्ति तो वापस मिले जो इसने मुझसे छीनी है!
नागों के शरीर में वापस आते ही नागराज की शक्ति तेजी से वापस आने लगी–
आऽऽऽ ह! अब कुछ चैन पड़ा!
अब मैं इस कारगवशी की आंखों की पुतलियों में एक-एक विशेष सूक्ष्म सर्प बिठा दूंगा! जो इसकी सम्मोहन शक्ति को बाहर निकलने से पहले ही नष्ट करते रहेंगे!...
–और फिर इसे जेल पहुंचाने का इंतजाम करूंगा!
एक जेल में मुझे भी जाना है नागराज!
तुम्हारे शरीर की जेल में। हालांकि इसके लिए मुझे मणि को त्यागना होगा! पर मैं इसके लिए तैयार हूं!
पर तुम मेरे शरीर में क्यों रहना चाहते हो नागू?
एक तो मुझे लाखों करोड़ों दोस्त मिलेंगे! और दूसरे तुम शहर में रहते हो! फिल्में देखने को खूब मिलेंगी!
फिल्में! हा हा हा! तुम्हारा फिल्मी भूत शायद जिन्दगी भर नहीं उतरेगा! मैं तैयार हूं! पर इससे पहले तुमको अपने परिवार तक मणियां पहुंचाकर आना होगा!
ओ० के० सर!